❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 43, अंक 31 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 29 जून, 2020 से रविवार 5 जुलाई, 2020
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

चीन के ढीले पड़े तेवर : सफल हथियार सिद्ध हो रहा है बहिष्कार

सरकार द्वारा चीनी मोबाइल एप्प को बैन करने का निर्णय

भारत सरकार ने जिस तरह चीन के 59 एप्स पर पाबंदी लगाई है उससे चीन बिफर पड़ा है। सरकार ने चीन को एहसास करा दिया है कि सीमा पर खूनी संघर्ष और कारोबार दोनों एक साथ नहीं चल सकते। केंद्र सरकार ने 59 स्मार्टफोन ऐप को प्रतिबंधित कर अपना रुख साफ कर दिया है कि अब चोरी और सीनाजोरी एक साथ नहीं चलेंगे। लेकिन अब सबसे बड़ी जरूरत है कि चीन के प्रबन्धित एप्स के विकल्प भारत को खोजने ही होंगे। हर क्षेत्र में हमें चीन का तोड़ निकालना होगा। चीन से यदि हम अपना आयात रोकते हैं तो हमें उन उत्पादों को अपने यहां बनाना होगा मतलब हमें आत्मनिर्भर बनना होगा, हम सब चीजों का बहिष्कार कर देंगे तो फिर जाहिर है कि हम खुद हर चीज का उत्पादन भी करेंगे। चीन का दबदबा इसलिए भी खत्म करना जरूरी है कि हम बहुत हद तक उस पर निर्भर हो गए थे, हमने अपना उत्पादन बंद कर दिया था, अब हम खुद कुछ करने की स्थिति में होंगे, अपने आपको खड़ा करना होगा इसके लिए हर भारतीय को आगे आना होगा।

.....जिस तरह से अपने मृतकों की संख्या चीन की सरकार छुपा रही है उसने सैनिक परिवारों में और आम जनता में आक्रोश बढ़ गया है चीन में यह संदेश साफ-साफ पहुंच चुका है 1962 वाला भारत नहीं है 1962 में भारत की राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी चीन के लिए वरदान साबित हुई थी आज उसे विपरीत स्थिति है आज के भारत की राजनीतिक शक्ति का मुकाबला करने की ताकत चीन में नहीं है भारत ने सीमा पर सैन्य शक्ति बढ़ाने के साथ-साथ जिस तरह से चीन की आर्थिक घेराबंदी शुरू कर दी है वह स्पष्ट संकेत दे रही है कि हम चीन को उस की हद में ही रखेंगे।..

भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसको स्वदेश से प्यार नहीं।।

आज संपूर्ण विश्व में चालबाज और धोखेबाज चीन का पर्दाफाश हो गया है। चीन की नियत और नीति दोनों को विश्व स्तर पर लोग पूरी तरह से समझ गए हैं। चीन हमेशा अपने लाभ के लिए दूसरों का बुरा करने की कोशिश में रहता है। भारत राष्ट्र की गरिमा को बढ़ाने के लिए अपने देश की आन, बान और शान की रक्षा के लिए तथा अपनी आर्थिक आत्मनिर्भरता और संप्रभुता को बनाए रखने के लिए आइए चीन में निर्मित प्रत्येक उत्पाद का बहिष्कार करने का संकल्प लेकर अपने जीवन को गौरवान्वित करें। संकल्प पत्र पृष्ठ 3 पर दिया गया है। आप संकल्प पत्र को https://bit.ly/2VGERyv लिंक पर जाकर ऑनलाइन भरकर सबमिट करें।

- विनय आर्य, महामन्त्री

हिल गया चीन का मानसिक संतुलन

अक्सर अब तक यही कहा जाता रहा है कि चीन मनोवैज्ञानिक युद्ध लड़ता है लेकिन इस बार वह मनोवैज्ञानिक युद्ध नहीं बल्कि प्रोपेगेंडा कर रहा है। चीन की हरकतों को देखकर लग रहा है कि वह अब मनोवैज्ञानिक नहीं बल्कि मनोरोगी होकर छल कपट करने की फिराक में है; जिसे भारत संभव नहीं होने दे रहा है। चीनी मीडिया का मुखपत्र ग्लोबल टाइम्स जिस तरह की सरकारी वीडियो डाल रहा है उन्हें देखकर हंसी आती है। मार्शल आर्ट की ट्रेनिंग करते हुए जवानों की फोटो इस तरह डाली जा रही हैं, मानो मार्शल आर्ट सिर्फ चीन के सैनिकों को ही आता है और भारत के सैनिक जैसे इस बारे में कुछ भी नहीं जानते। 4 दिन पहले ग्लोबल टाइम्स ने चीनी सैनिकों की बुहान से तिब्बत जाने की एक वीडियो डाली है। उस वीडियो में ट्रेनिंग लेते हुए सैनिक सर पर हेलमेट लगाए हुए हैं, बस में बैठे सैनिक भी हेलमेट लगाए हुए हैं, ट्रेन में बैठे हुए सैनिक भी हेलमेट लगाए हुए हैं, और फिर जहाज में बैठे हुए सैनिक

- शेष पृष्ठ 3 पर

प्रधानमन्त्री श्री मोदी जी के 'मन की बात' का असर

चीन सीमा पर तनाव के बीच प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मन की बात कार्यक्रम का काफी महत्वपूर्ण असर चीन पर पड़ा है। 28 जून 2020 रविवार को मन की बात कार्यक्रम में मोदी जी का यह बयान कि जो भारत की ओर आंख उठाएगा उसे करारा जवाब दिया जाएगा। भारत की भूमि पर आंख उठाकर देखने वालों को करारा जवाब मिला है, हिंदुस्तान मित्रता निभाना भी जानता है, तो आंख में आंख डाल कर देखना और उचित जवाब देना भी जानता है। भारत के गौरव और अखंडता पर जो चोट पहुंचाएगा उसे छोड़ा नहीं जाएगा। प्रधानमंत्री का यह बयान भारत की दृढ़ता को दिखाता है। जिससे चीन को अपनी औकात का पता चल रहा है। चीन में सीमा पर झड़प कर ऐसी गुस्ताखी कर दी है जिसे आने वाले समय में भुलाया नहीं जा सकता। प्रधानमंत्री मोदी ने इस कार्यक्रम में कहा कि भारत माता की रक्षा के लिए जिस संकल्प से हमारे जवानों ने बलिदान दिया है, उसी संकल्प को हमें जीवन का उद्देश्य बनाना है, हमारा हर प्रयास इसी दिशा में होना चाहिए ।जिससे सीमाओं की रक्षा के लिए देश की ताकत बढ़े और देश अधिक सक्षम बने तथा आत्मनिर्भर बने यही हमारे शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि भी होगी। विविधता में एकता हमारे देश के बारे में हमेशा यह कहा जाता है रहा है। इस बहुलता में राष्ट्रीय एकता अखंडता एवं विकास को सुनिश्चित करना ही सरकार, समाज और नागरिकों का कर्तव्य है। यह हमारे संस्कार में भी निर्देश है और संविधान में भी इसकी संकल्पना है। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने उद्बोधन में और भी बहुत कुछ सारगर्भित और प्रेरक बिंदु प्रस्तुत किए, लेकिन चीन का नाम लिए बिना उनका संदेश बहुत असरदार साबित हो रहा है।

वेद-स्वाध्याय

हे देव

ये त्वा देवोस्त्रिकं मन्यमानाः पापा भद्रमुपजीवन्ति पज्राः।
न ढूढ्येऽअनु वदासि वामं बृहस्पते चयस इत पियारुम्।।। ऋ० १/११०/५
ऋषि : **अगस्त्यः**।। देवता - **बृहस्पतिः**।। छन्दः **स्वराट्पंक्तिः**।।

शब्दार्थ - **देव** = हे देव! **ये** = जो **त्वा उस्त्रिकं मन्यमानाः** = तुझे केवल भोगों का स्त्रावक या गौओंवाला ही समझते हुए **पज्राः** = [भोग्य वस्तुओं को] प्राप्त करने वाले, [ऐश्वर्यों का] प्रार्जन करने वाले **पापाः** = पापी लोग **भद्रं उपजीवन्ति** = तुझ भद्र का उपजीवन करते हैं, तुझ सुखदाता पर जीवित रहते हैं, ऐसे **ढूढ्ये** = दुर्बुद्धि पुरुष [पुरुषों] के लिए **बृहस्पते** = हे इस बृहद् जगत् के पालक देव! **वामम्** = श्रेष्ठ ऐश्वर्य को **न अनुददासि** = नहीं देता है बल्कि **पियारुम्** = उस हिंसक को तू **चयसे इत्** = विनष्ट ही कर देता है।

विनय - हे देव! दुर्बुद्धि लोग तेरे दिए भोगों को ऐसे अंधे होकर भोगते हैं कि वे और कुछ नहीं देखते। इस जगत में जो तूने अपनी नानाविध भोग्य वस्तुरूपी गौएं दे रखी है उनसे वे यथेष्ट भोग रूपी दूध दुहते जाते हैं, पर अपना और कुछ कर्तव्य नहीं समझते। वे तुझे भोला समझते हैं। तुझे ऐसा भोला भोगदाता समझते हैं जिसके भोगों को यूं ही लूटा जा सकता है। वे मूर्ख भोग प्राप्ति के रहस्य को नहीं समझते, भोग और यज्ञ किसी अविच्छेद्य बन्धन से जुड़े हुए हैं, यह नहीं समझते। वे नहीं देखते कि हमारे भोग भोगने से प्रकृति में जो क्षति आ जाती है उसे यदि यज्ञ द्वारा पूरा नहीं करते रहेंगे तो हमारी भोग प्राप्ति की जड़ ही कट जाएगी। वे यज्ञार्थ कुछ भी कर्म न करते हुए केवल भोग भोगना चाहते हैं, बस यही पाप है। सूक्ष्मता से देखें तो सब पाप के मूल में जो भावना रहती है, वह यही है। इस पाप भावना से युक्त होकर, पापी होकर वे तुझ भद्र के आश्रय से जीना चाहते हैं। मानो तेरी भलमनसाहत का लाभ (?) उठाकर वे पापी होकर भी तेरी भद्रता पर अपने को पुष्ट करना चाहते हैं। वह कुछ समय तक इस तरह तेरा उप जीवन करते भी हैं, पर बिना यज्ञ के भोग कब तक मिल सकता है? बिना भोज्यप्रदान आदि सेवा किए गौ से दूध कब तक मिल सकता है? अतः तू आगे के लिए ऐसे दुर्बुद्धि को अपना उत्तम ऐश्वर्य देना बंद कर देता है, नहीं देता। बल्कि उस हिंसक का तू विनाश ही कर देता है। भोग्यग्रस्त पुरुष को जब तेरे सच्चे विधान से भोगप्राप्ति में बाधा पड़ने लगती है तो वह क्रुद्ध होता है और नानाविध घोर हिंसाएं करके भी भोग पाना चाहता है। उस समय हे बृहस्पते! तू उसका नाश कर देता है। यदि तू ऐसा न करे तो इस बृहत जगत का पालन न कर सके, तू बृहस्पति न रह सके। ऐसे ही अटल न्याय-विधान द्वारा अपने इस बृहत् ब्रह्माण्ड का पालन कर रहा है।

-: साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

कोरोना वायरस की उत्पत्ति और संक्रमण को ग्रहों की चाल बताते ज्योतिषाचार्य

कोरोना फैलाने में हाथ चीन का या चन्द्रमा का?

.....कोरोना महामारी के उद्गम को लेकर विश्व में एक चर्चा आम है कि यह महामारी चीन के वुहान शहर के किसी लेब से फैली जिससे आरम्भ में वुहान और फिर पर्यटकों और आम नागरिकों की आवाजाही के कारण इससे आज पूरा विश्व जूझ रहा है। .....जहाँ दुनिया भर के लोग इस महामारी के लिए चीन को दोषी ठहरा रहे है वहीं भारत के ज्योतिषचार्य इस महामारी के लिए चन्द्रमा पर आरोप लगा रहे है। भारत के प्रसिद्ध ज्योतिषचार्य ने कहा है करोना वायरस को फैलाने में चंद्रमा का सबसे बड़ा हाथ है। क्योंकि चन्द्रमा जल तत्त्व का कारक है, समुद्र और समुद्र से संबंधित उत्पादों पर चंद्रमा का आधिपत्य होता है। .....

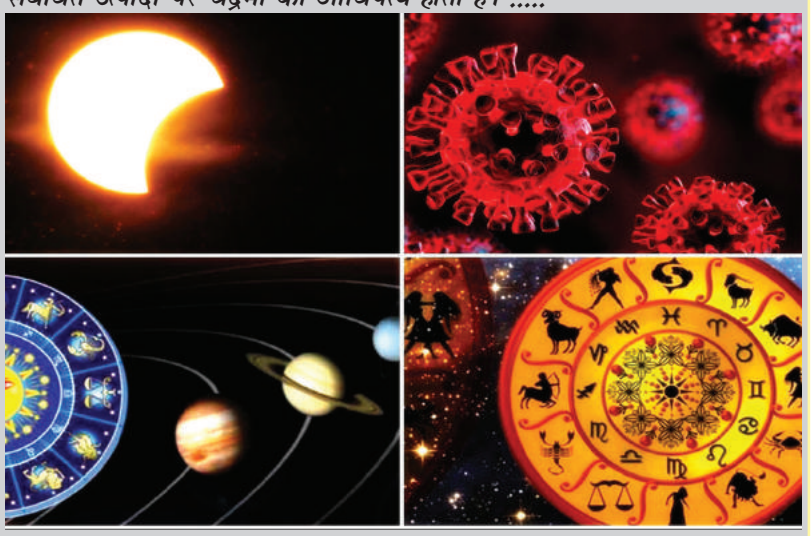

को रोना माई की जय हो, बिहार से भाग जाओ, देश से भाग जाओ, जहां से आई हो, वहीं चली जाओ। ये नारे पिछले दिनों बिहार में महिलाओं के द्वारा लगाये जा रहे थे, ये वीडियो सोशल मीडिया पर भी खूब वायरल हुई थी। जिसमें कुछ महिलाएं कथित कोरोनामाई की पूजा करने के बाद ऐसा कर रही थी। हालाँकि इससे पहले 'गो कोरोना गो' का ऐतिहासिक नारा लगाने वाले केंद्रीय मंत्री रामदास आठवले का वायरल वीडियो भी शायद सभी ने देखा होगा, अब भारत से कोरोना वायरस को भगाने के लिए कुछ राज्यों में पूजा-पाठ और गीतों का सहारा लिया जाने लगा है। बिहार से लेकर असम तक कई राज्यों से 'कोरोना माई' की पूजा के साथ-साथ, बली देने की घटनाएं भी सामने आ रही हैं।

कुछ जगह महिलाएं सात गड्ढे खोद कर उसमें गुड़ का शर्बत डालकर के साथ लौंग, इलायची, फूल व सात लड्डू रखकर पूजा करने में जुटी हैं, जिससे इस महामारी से छुटकारा मिल जाए। तो बिहार के मुजफ्फरपुर के ब्रह्मपुरा स्थित सर्वेश्वरनाथ मंदिर में पिछले कई दिनों से 'कोरोना माता' की पूजा हो रही है। वैसे ये मामला अब सिर्फ बिहार तक सीमित नहीं रहा है। देश के कई हिस्सों में महिला-पुरुष महामारी के प्रकोप को खत्म करने के लिए पूजा कर रहे हैं। उनका कहना है कि 'कोरोना माई' उन पर नाराज न हों, इसलिए ये जरूरी है कि जानलेवा वायरस का अंत करने का एकमात्र तरीका यही पूजा है। सिर्फ इतना ही नहीं बताया जा रहा है कि झारखंड के कोडरमा जिले के उरवां गांव में आस्था के नाम पर अंधविश्वास का ऐसा खेल चला जिसमें देवी माता के मंदिर में कोरोना को शांत करने के लिए एक दिन में करीब 400 बकरों और मुर्गों की बलि तक दे दी गई।

वैसे देखा जाये कोरोना महामारी के उद्गम को लेकर विश्व में एक चर्चा आम है कि यह महामारी चीन के वुहान शहर के किसी लेब से फैली है जिससे आरम्भ में वुहान और फिर पर्यटकों और आम नागरिकों की आवाजाही के कारण इससे आज पूरा विश्व जूझ रहा है। लाखों लोग इससे अपने प्राण गंवा चुकें है और इससे कई गुना बड़ी संख्या में विश्व भर में लोग इस वायरस से संक्रमित हैं। भारत में ही देखें तो लाखों लोग संक्रमित हैं, हजारों से अधिक लोगों को यह बीमारी लील चुकी है।

जहाँ दुनिया भर के लोग इस महामारी के लिए चीन को दोषी ठहरा रहे हैं वहीं भारत के ज्योतिषचार्य इस महामारी के लिए चन्द्रमा पर आरोप लगा रहे हैं। भारत के प्रसिद्ध ज्योतिषचार्य ने कहा है कि करोना वायरस को फैलाने में चंद्रमा का सबसे बड़ा हाथ है। क्योंकि चन्द्रमा जल तत्त्व का कारक है, समुद्र और समुद्र से संबंधित उत्पादों पर चंद्रमा का आधिपत्य होता है।

किन्तु एक दूसरे ज्योतिषी ने इसमें चंद्रमा को बरी कर दिया और कोरोना का मुकदमा केतु ग्रह के नाम लिख दिया। इन बाबा जी ने बताया कि मार्च 2019 से ही केतु, धनु राशि में चल रहा है लेकिन चार नवम्बर 2019 को बृहस्पति का प्रवेश भी धनु राशि में हो गया था। जिससे बृहस्पति और केतु का योग बन गया और चार नवम्बर को बृहस्पति और केतु का योग शुरू होने के बाद कोरोना वायरस का पहला केस चीन में नवम्बर के महीने में ही सामने आया था।

अब एक तीसरे गुरु घंटाल सामने आये और बोले वैज्ञानिकों की राय बेकार है। कोरोना के फैलने का कारण है आकाश मंडल और इन्होंने चार ग्रहों पर मुकदमा दायर कर दिया। इसमें सूर्य, शनि, चंद्र, केतु इनके कारण कोरोना बीमारी फैली और इन ग्रहों की यह स्थिति 2021 तक विद्यमान रहेगी क्योंकि ये विपरीत प्रभाव में चल रहे हैं।

अब बात यही खत्म नहीं होती काशी विद्वान परिषद संगठन मंत्री एवं ज्योतिष शास्त्री पं. दीपक मालवीय जी ने तो कोविड-19 यानि कोरोना के फैलने का कारण ग्रहों की टेढ़ी चाल बताया। मतलब ग्रह सीधे चल रहे थे अचानक लचर पचर होकर चलने लगे।

जहाँ दीपक मालवीय ने सभी ग्रहों को इसमें दोषी माना तो ज्योतिष शास्त्र पर पकड़ रखने वाले आचार्य डॉ. ज्योति वर्धन साहनी ने इसमें कई ग्रहों को बरी कर दिया उन्हें जमानत दे दी, कुख्यात केतु ग्रह को भी पेरोल पर रिहा कर दिया और असली अपराधी राहु और शनि को बताया। इनका कारण बड़ा दिलचस्प है इनके अनुसार राहु का अंक 4 होता है, 4 नंबर यानि 22 मार्च। राहु का शतभिषा नक्षत्र भी 22 मार्च को लग रहा है उसे शनि का साथ मिला और दोनों ने मिलकर तबाही मचा दी।

एक प्रसिद्ध ज्योतिषी ने कोरोना की कुंडली ही बना दी चार नवम्बर को इतने बजे इस घड़ी में कोरोना का जन्म हुआ। इसकी कुंडली में शनि मजबूत है, इसे राहू का साथ मिला है। कोरोना के ग्रह के ग्रह-नक्षत्र इतने प्रभावी और मजबूत बताये कि आम आदमी को कोरोना से चिढ़ हो जाये कि काश मेरे भी ग्रह नक्षत्र इतने मजबूत होते।

अब हो सकता है एक पल को आपको लगे कि हम आपकी आस्था पर चोट कर रहे हैं। लेकिन असल में हम आस्था पर नहीं बल्कि अंधविश्वास पर चोट कर रहे हैं। क्योंकि 21 मार्च तक किसी ज्योतिष को नहीं पता था कि अचानक सम्पूर्ण भारत में लॉक डाउन लगेगा और राहू-केतु की दिशा बदलने वाले खुद सरकारी दिशा निर्देशों के भरोसे बैठ जायेंगे।

निर्मल बाबा जैसे लोग जो समोसे और चटनी से कृपा बरसाते थे। जो पिछले दो महीने से गायब हैं और खुद मास्क लगाकर अपनी ही - *शेष पृष्ठ 4 पर*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में जूम के माध्यम से ऑनलाइन वैबनार के रूप में

'जीवन की सर्वांगीण उन्नति एवं कला विज्ञान' विषय पर साप्ताहिक प्रवचन कार्यक्रम सम्पन्न

आर्य समाज का प्रचार-प्रसार लगातार गतिशील है। कोरोना काल में आर्य समाज द्वारा पूरे भारत में मानव सेवा के कार्य संचालित किए गए, जो अब तक अनवरत चल रहें हैं। इसके साथ जूम एप के माध्यम से युवाओं के लिए विशेष प्रशिक्षण शिविर, सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय शिविर, संध्योपासना और विशेष साधना शिविर, विश्व पर्यावरण दिवस परिचर्चा, योग दिवस आदि कार्यक्रम लगातार हो रहे हैं। इन सभी कार्यक्रमों में सहभागियों और कार्यकर्ताओं की भूमिका अत्यंत प्रशंसनीय है। इस क्रम में 22 से 28 जून 2020 जूम वेब पर, सात दिवसीय प्रवचन माला आचार्य डा. वागीश जी के सानिध्य में 'अपने तथा बच्चों के जीवन की सर्वांग उन्नति की कला और विज्ञान' विषय पर सफलता पूर्वकसंपन्न हुई। डाक्टर बागीश जी ने 16 संस्कारों के गंभीर विषय को अपनी गरिमामयी योग्यता से बहुत ही सरलता व सुगमता के साथ समझाकर श्रोताओं को अनुप्राणित किया। गर्भाधान संस्कार का महत्व बताते हुए उन्होंने कहा कि अगर हम किसी अतिथि को थोड़ी देर के लिए बुलाते हैं तो बहुत सारी तैयारी करते हैं लेकिन जिस जीवात्मा को अपने परिवार से जोड़ने हेतु जब उसको आमंत्रित करते हैं तो हमें बहुत सारी तैयारियां भी करनी चाहिए। जैसे माता रुक्मणी तथा योगीराज श्रीकृष्ण ने अपनी संतान के लिए की थी। जन्म लेने वाली आत्मा न

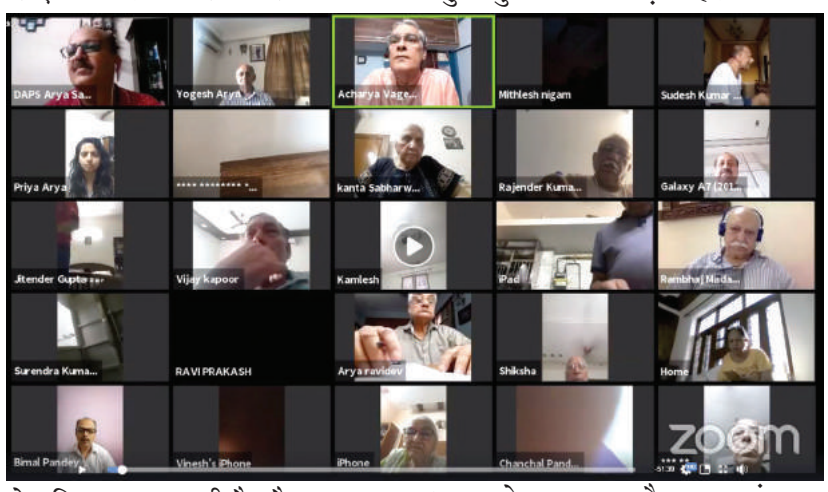

तो परिवार चुन सकती है और न आत्मा जीव को चुन सकती है क्योंकि जीव का जन्म व आत्मा का अस्तित्व कर्मफल का परिणाम है, जो परिवार तथा आने वाले जीव को प्राप्त होता है।

जब जीव मनुष्य योनि में जन्म लेता है तो न उसके पास व्यवहारिक ज्ञान होता है न भौतिक ज्ञान होता है। उसको अपने शारीरिक बल, कर्म करने की क्षमता, बुद्धि की दिशा और विवेक, सब कुछ अपने परिवार, गुरुजनों तथा वातावरण से प्रभावित होकर ही बढ़ाना होता है तथा बहुत कुछ सीखना पड़ता है। मन की क्षमता को बढ़ाना पड़ता है, उत्साह, संकल्प शक्ति, संघर्ष शक्ति में वृद्धि करनी होती है लेकिन विवेक पूर्वक संतुलित ढंग से बढ़ानी होती है। ये सब क्षमताएं संस्कारों से बढ़ती हैं जैसे संस्कार प्राप्त होंगे वैसे कर्म बन जाएंगे। जीव के विवेकानुसार किए गए कर्म ही उसके वर्तमान जीवन में सुख समृद्धि, यश अपयश, आंतरिक प्रेम, प्रसन्ता, अस्तित्व से स्वस्ति, सामाजिक उन्नति और आर्थिक व आत्मिक उन्नति निर्भर करते हैं। हमारा शरीर स्वयं वृद्ध हो जाएगा लेकिन हमें आत्मा की वृद्धि करनी है ताकि अगले जन्म के स्तर में और वृद्धि हो और हम मोक्ष मार्ग की तरफ बढ़ते चलें।

28 जून 2020 को समापन कार्यक्रम में पहले यज्ञ का कार्यक्रम गुरु विरजानंद संस्कृतकुलम् हरीनगर से आयोजित किया गया। यज्ञ प्रार्थना तथा ईश्वर भक्ति का भजन आचार्या अमृता आर्या जी ने सुनाया, तदुपरांत डाक्टर वागीश आचार्य जी ने शंकाओं का समाधान किया और समापन उद्बोधन देते हुए उन्होंने मानव जीवन को फूल से प्रेरित होने का संदेश देते हुए कहा-

हर सुमन का सुरभि से,
यह अनचिन्हित अनुबंध।
हवाओं को सौंपे बिना,
यदि जाऊं तो सुगंध।।

हमारा जीवन फूल की तरह हो जो

- शेष पृष्ठ 5 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

चीन के ढीले पड़े तेवर : सफल हथियार सिद्ध हो रहा है बहिष्कार

भी हेलमेट लगाए हुए हैं। इससे चीन के मानसिक रोगी होने का सबूत मिलता है। बस, ट्रेन और जहाज में भी हेलमेट लगाकर बैठा जाता है? और तो और बुहान और तिब्बत में एक जैसे कपड़े चीनी सैनिकों ने पहन रखे हैं जबकि बुहान गरम मैदानी इलाका है और तिब्बत बेहद ठंडा पहाड़ी इलाका है। दोनों के तापमान में जमीन आसमान का अंतर है। लगता है वीडियो बनाने की जल्दबाजी में या यूं कहें कि गलवान में हुई पिटाई के कारण मानसिक संतुलन खो जाने की वजह से वह तकनीकी चीजों पर भी ध्यान नहीं दे पा रहा है।इससे शानदार वीडियो तो भारत के बच्चे बनाना जानते हैं।

21 जून को ग्लोबल टाइम्स लिखता है चीनी आर्मी की तरफ जो पहला वार करेगा, उसे धरती से मिटा दिया जाएगा। 22 जून को लिखता है कि भारत अपने राष्ट्रवाद को कंट्रोल करें, नहीं तो 1962 से बड़ी शर्मिदगी उठानी पड़ेगी। 23 जून को लिखता है कि चीन की सैन्य ताकत भारत से ज्यादा शक्तिशाली है, चीन का जीडीपी भारत से बहुत ज्यादा है। फिर 25 जून को उसने लिखा कि चीन के सामान का बहिष्कार करने से भारत को बहुत नुकसान होगा। यह दावे सिर्फ मनोवैज्ञानिक दबाव बनाने के लिए नहीं किए जा रहे हैं। इनसे एक संदेश यह भी मिल रहा है कि चीन युद्ध से बचने की कोशिश कर रहा है, ऐसा करने के पर्याप्त कारण हैं खुद चीन के रक्षा विशेषज्ञ मानते हैं कि चीन के 20% सैनिक युद्ध के लिए फिट नहीं है। चीन में हायर एजुकेशन के लिए जरूरी है कि 4 साल फौज में रहा जाए। फौज में आने वाले युवा सैनिकों की प्राथमिकता हायर एजुकेशन होती है, लड़ना नहीं। आबादी पर नियंत्रण की पॉलिसी के कारण एक-एक युवा ही घरों में है, इसका दुष्प्रभाव भी चीन की फौज पर पड़ रहा है। वन चाइल्ड पॉलिसी के कारण पिछले 36 सालों में पैदा हुए लोग थोड़े से संघर्ष में ही घुटने टेक देते हैं। गलवान में हुए संघर्ष की अंदरूनी जानकारी में यह भी बताया जा रहा है कि संघर्ष के दौरान कई चीनी सैनिक रोते हुए देखे गए। दूसरी तरफ भारतीय सैनिकों की बहादुरी की भी जानकारी मिली है भारत के एक सैनिक ने अपनी दोनों बाजुओं में दो-दो चीनी सैनिकों को दबोच रखा था। अपने 4 सैनिकों की जान जाते देख, जब अन्य चीनी सैनिक झुंड बनाकर बहादुर भारतीय सैनिक की ओर झपटे तो वह वह भारतीय सिख सैनिक - 'जो बोले सो निहाल' का नारा लगाते हुए चारों चीनी सैनिकों को दबोचे हुए नदी में कूद गया, वह बहादुर भारतीय जवान खुद शहीद हो गया, मगर चीन के 4 सैनिकों को उसने मौत के घाट उतार दिया। भले ही हमारे यहां कुछ राजनीतिक लोग गलवान के संघर्ष को लेकर सरकार को घेरने की कोशिश कर रहे हैं और अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय जवानों की बहादुरी पर सवाल उठा रहे हैं लेकिन चीन के सैनिक परिवारों को और अन्य जनता तक भारतीय जवानों की वीरता का संदेश पहुंच गया है। जिस तरह से अपने मृतकों की संख्या चीन की सरकार छुपा रही है उससे वहां के सैनिक परिवारों में और आम जनता में आक्रोश बढ़ गया है। चीन में यह संदेश साफ-साफ पहुंच चुका है कि 1962 वाला भारत नहीं है। 1962 में भारत की राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी चीन के लिए वरदान साबित हुई थी। आज उससे विपरीत स्थिति है, आज के भारत की राजनीतिक शक्ति का मुकाबला करने की ताकत चीन में नहीं है। भारत ने सीमा पर सैन्य शक्ति बढ़ाने के साथ-साथ जिस तरह से चीन की आर्थिक घेराबंदी शुरू कर दी है वह स्पष्ट संकेत दे रही है कि हम चीन को उस की हद में ही रखेंगे।

- विनय आर्य, महामन्त्री

चीनी उत्पाद बहिष्कार करने का संकल्प लें

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली ने स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग व चीन निर्मित वस्तुओं का बहिष्कार करने को लेकर जन-जागरण अभियान चलाने का निर्णय लिया, क्योंकि-

⋆ चीन ने हमारी भूमि को हथियाने का दु:साहस किया है। हमारी सेना ने उसका मुंहतोड़ जवाब दिया। हमें भारत की सेना पर गर्व है और हम उसके साथ खड़े हैं।

⋆ चीन द्वारा निर्मित वस्तुओं के कारण ही भारत के उद्योगों का पतन हो रहा है, जिससे हमारे कामगारों के हाथों से रोजगार छिना है।

आर्यसमाज राष्ट्र और समाज की सेवा लिए सदैव समर्पित है और सभी का आह्वान करता है कि चीन निर्मित वस्तुओं का बहिष्कार करें और स्वदेशी अपनाएं, भारत को आत्मनिर्भर बनाएं।

कृपया नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें और संकल्प पत्र भरकर सबमिट करें।

https://bit.ly/2VGERyv

संयोजक आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य सम्पर्क सूत्र: 9313013123

संकल्प पत्र

मैं भारतीय नागरिक सत्य निष्ठा पूर्वक स्वयं प्रेरणा से संकल्प लेता हूँ कि -

1. मैं चीन द्वारा निर्मित वस्तुओं अथवा सेवाओं का बहिष्कार करुंगा।
2. मैं अधिकतर भारत में ही निर्मित वस्तुओं अथवा सेवाओं का क्रय और प्रयोग करूँगा।
3. मैं भारत के आर्थिक विकास और राष्ट्र को आत्म निर्भर बनाने में सहयोग करूँगा।

"मैं उपरोक्त संकल्प का जीवनभर निर्वाह करने का प्रयास करूंगा/ करूंगी।"

नाम : .....
हस्ताक्षर : .....
दूरभाष : .....
ई-मेल : .....
राज्य : .....

जीसस की सूली के नीचे सिसकती नन

.....ईसाई समाज में कुछ लड़कियां अपना पूरा जीवन जीसस के नाम कर देती हैं और आजीवन कुंवारी रहती हैं, जिन्हें नन कहा जाता है। जब यह नन बनाने की शपथ लेतीं हैं तो एक औपचारिक समारोह में विवाह के वस्त्र धारण किए इनका जीसस से विवाह रचाया जाता है इसके बाद ये जीसस की पत्नी बन जाती हैं। ..... भारत में ईसाई मिशनरीज गरीब इलाकों में अक्सर लोगों से यह कहकर धर्म परिवर्तन कराते हैं कि जीसस की शरण में आ जाओ, जीसस तुम्हारे सारे दुःख हर लेगा। तुम्हारी रक्षा करेगा। लेकिन जो जीसस विश्वभर में अपनी दो से ढाई करोड़ पत्नियों अर्थात ननों की रक्षा नहीं कर पा रहा, जिन्हें पादरी अपनी हवस का शिकार बना रहे हैं क्या वह किसी और की रक्षा करेगा?

आपने चर्च देखा ही होगा, एक अलग तरह की ईमारत होती है। इस ईमारत के अन्दर एक सलीब होती है, सलीब सूली को कहा जाता है जिस पर जीसस सूली पर टंगा होता है। आमतौर पर इस सलीब के नीचे खड़े होकर जीसस से प्रार्थना करने का विधान है, लेकिन अब अक्सर इस सलीब के नीचे चर्च की नन सिसकती दिखाई देती है। वही नन जिसे जीसस की आध्यात्मिक पत्नी कहा जाता है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों के आंकड़े उठाकर देखें तो चर्च के फादर जीसस की ये कथित पत्नी जिन्हें नन कहा जाता है उनका यौन शोषण कर रहे हैं। ये बात हम नहीं बल्कि ईसाइयों के सबसे बड़े धर्मगुरु पोप फ्रांसिस ने स्वीकार करते हुए कहा था हां पादरी और बिशप ननों का यौन शोषण कर रहे हैं।

दरअसल ईसाई समाज में कुछ लड़कियां अपना पूरा जीवन जीसस के नाम कर देती हैं और आजीवन कुंवारी रहती हैं, जिन्हें नन कहा जाता है। जब यह नन बनने की शपथ लेतीं हैं तो एक औपचारिक समारोह में विवाह के वस्त्र धारण किए इनका जीसस से विवाह रचाया जाता है इसके बाद ये जीसस की पत्नी बन जाती हैं।

भारत में ईसाई मिशनरीज गरीब इलाकों में अक्सर लोगों से यह कहकर धर्म परिवर्तन कराते हैं कि जीसस की शरण में आ जाओ, जीसस तुम्हारे सारे दु:ख हर लेगा। तुम्हारी रक्षा करेगा। लेकिन जो जीसस विश्वभर में अपनी दो से ढाई करोड़ पत्नियों अर्थात ननों की रक्षा नहीं कर पा रहा, जिन्हें पादरी अपनी हवस का शिकार बना रहे हैं क्या वह किसी और की रक्षा करेगा?

भारत, अमेरिका, आस्ट्रलिया में इसी आस्था की आड़ में लगातार जीसस की पत्नियों अर्थात् ननों का ही यौन शोषण नहीं बल्कि चर्च के कॉन्वेंट में पढने वाली मासूम बच्चियों का भी ये पादरी शिकार कर रहे हैं। 17 अगस्त 2014 ओडिशा के मयूरभंज जिले में उडाला के सेंट जोसफ कॉन्वेंट स्कूल के फादर संतोष जोजर को तीसरी कक्षा की छात्रा के साथ रेप करने आरोप में गिरफ्तार किया गया था। फरवरी, 2017 में केरल के 52 वर्षीय कैथोलिक पादरी रॉबिन वडक्कमचेरी को नाबालिग छात्रा के साथ रेप में पकड़ा था। जिसे पुलिस ने कोच्चि अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के पास से उस समय गिरफ्तार किया था, जब वह देश छोड़ने की जुगत में था। कमाल देखिये देश भर में इतने मामले लगातार उजागर होने के बाद भी लोग अपने बच्चों को इनकी चमचमाती बिल्डिंग के स्कूलों में भेज रहे हैं जबकि वह स्कूल अब शिक्षा की पाठशाला नहीं बल्कि दुष्कर्मों की पाठशाला बन चुके हैं।

सिर्फ कॉन्वेंट के बच्चे ही नहीं बल्कि गिरजाघरों के हाल भी बेहाल दिखाई देते हैं। असल में कुछ समय पहले केरल कॉन्वेंट से बचकर भागी एक नन मैरी चांडी ने अपनी एक आत्मकथा लिखी जिसमें मैरी में चर्च में हुए यौन शोषण का जिक्र किया था। अपनी आत्मकथा 'ननमा निरंजवले स्वस्ति' में सिस्टर मैरी चांडी ने लिखा था कि चर्च में जिंदगी आध्यात्मिकता के बजाय वासना भरी ज्यादा थी। इससे पहले एक नन सिस्टर जेस्मी की पुस्तक 'आमेन ऑटोबायॉग्रफी ऑफ ए नन' ने तहलका मचा दिया था। कैथोलिक चर्च के बारे में प्रोफेसर मैथ्यू शेल्म्ज का अध्ययन आंखें खोलने वाला है। उन्होंने एक लेख में माना था कि भारत भर में फैले कैथोलिक चर्च में नन और बच्चों के साथ यौन शोषण के मामले बढ़ रहे हैं। दूरदराज के इलाकों में चल रहे मिशनरी प्रकल्पों में यौन शोषण के ज्यादातर मामले दबे रह जाते हैं, क्योंकि पीड़ित अक्सर गरीब तबके के लोग होते हैं और उन्हें पैसे देकर चुप करा दिया जाता है।

अगर ये खबर राजनितिक स्तर पर उठाई जाती हैं तो यह कहकर दबाने की कोशिश की जाती है कि भारत में 'अल्पसंख्यकों को प्रताड़ित करने के लिए षड्यन्त्र रचा जा रहा है या इसे हिंदुत्व वादी लोग कहकर दबाने का प्रयास किया जाता है।

भारत में चर्च के कमरों में ननों के साथ दुष्कर्म का लंबा इतिहास रहा है। आमतौर पर जो खबरें सामने आती हैं, उनमें उससे काफी कम चीजें पता चलती हैं, नन खुलकर अपने साथ हुए यौन शोषण को बयां नहीं करतीं। लेकिन एक अध्ययन से पता चला है कि सालों से नन चर्च में यौन शोषण का शिकार होती आ रही हैं। भारत में किसी चर्च के पादरी द्वारा जब किसी नन का यौन शोषण किया जाता है तो अधिकांश मामलों में नन यही कहती हैं कि पादरी ने 'उन्हें गलत तरीके से छुआ'। दरअसल, वेटिकन को लंबे समय से एशिया, यूरोप, दक्षिण अमेरिका और अफ्रीका में पादरियों और बिशपों द्वारा यौन उत्पीड़न के बारे में पता है, लेकिन उसने इसे रोकने के लिए बहुत कम काम किया है।

अब एसोसिएटिड प्रेस ने भारत जैसे देशों में ननों की स्थिति की जांच की और चर्च के भीतर यौन शोषण के दशकों पुराने इतिहास को उजागर किया है। ननों ने पादरियों के यौनाचार के बारे में विस्तार से बताया और लगभग दो दर्जन अन्य लोगों- नन, पूर्व नन और पुजारियों और अन्य-ने कहा कि उन्हें ऐसी घटनाओं का प्रत्यक्ष ज्ञान था। फिर भी भारत में चर्च में ननों से दुष्कर्म का पैमाना अस्पष्ट बना हुआ है। कई ननों का मानना है कि चर्च में ननों से दुर्व्यवहार आम बात है।

8 जुलाई, 2018 को केरल में एक चर्च के चार पादरियों पर एक विवाहित महिला ने सालों से कथित यौन उत्पीड़न और ब्लैकमेल करने का आरोप लगाया। उसने कहा कि 16 साल की उम्र से लेकर उसकी शादी होने तक एक पादरी ने उसका यौन उत्पीड़न किया। इसने भारतीय चर्च में 'कन्फेशन की पवित्रता' पर गंभीर प्रश्न खड़े कर दिए हैं। मामला यहीं खत्म नहीं हुआ। शादी के बाद जब उस महिला ने यह बात चर्च के एक दूसरे पादरी के सामने कबूल की तो उस पादरी ने भी कथित तौर पर उस महिला का यौन उत्पीड़न किया। इतना ही नहीं, जब पूरी तरह से निराश होकर यह महिला पादरी-काउंसलर के पास गई, तो वहां भी उसके साथ कथित दुर्व्यवहार हुआ।

पिछले कुछ समय में कई बार महिला आयोग ने केरल के चर्चों पर कई सवाल उठाए हैं। उसने केरल सरकार से केरल के चर्चों में बढ़ती यौन शोषण की घटनाओं की जांच केंद्रीय एजेंसी से करवाने को कहा है। राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष रेखा शर्मा ने था कि 'कन्फेशन' वाले मामले की जांच के दौरान उन्हें कई शिकायतें मिली हैं। आयोग ने तो चर्च में कन्फेशन (पाप स्वीकार करना) प्रथा खत्म करने तक की सिफारिश की। इस पर विवाद शुरू हो गया। पादरियों का कहना है कि इस प्रथा को बंद करने की बात करना आस्था पर प्रहार करने जैसा है।

इतना ही नहीं, अपनी यौनाचार की राह को आसान बनाने के लिए पादरी अपनी मनमर्जी के रीति-रिवाज गढ़ रहे हैं। नाइजीरिया के एक चर्च के पादरी ने निर्देश दिए कि औरतों का अंत:वस्त्र पहनना ईसा की खिलाफत है। पिछले दिनों वहां एक सभा में उक्त पादरी ने कहा कि अंत:वस्त्र पहनी औरतों को चर्च में प्रवेश नहीं देना चाहिए। पादरी रेवरेण्ड नोही लॉर्ड्स प्रोफेलर रिडेंप्शन चर्च का प्रतिनिधित्व करता है। चर्च में यौन अपराधों की बढ़ती तादाद से दुनियाभर के ईसाई हैरत में हैं और शायद इसी वजह से यूरोप में लोगों का चर्च के प्रति रुझान तेजी से कम होता जा रहा है।

भारत में भी चर्च यौन अपराधों का बुरी तरह से शिकार हो चुका है। लेकिन उसके कुछ ही मामले सामने आ पाते हैं। चर्च का मजबूत तंत्र उन्हें दबा देता है। फिर भी कुछ मामले उभर ही आते हैं। जिनमें नन सलीब के नीचे बैठी सिसकती देखी जा सकती है।

- राजीव चौधरी

पृष्ठ 2 का शेष

कोरोना फैलाने में हाथ चीन का या चन्द्रमा का?

कृपा बचाने में व्यस्त हैं। निर्मल बाबा ही क्यों, अनेकों ज्योतिषीयों से लेकर बाबाओं, मौलानाओं, पीर-फकीर, बंगाली बाबा, कोई भी एक ऐसा नहीं है जिसनें इस महामारी के बारे में बताया हो। लेकिन जब महामारी आई तो अचानक ये लोग फिर राहू, केतु, जिन्न, प्रेतात्मा में अटक गये। यानि आज के सभी ज्योतिषी कोरोना महामारी के बारे में बताने में नाकाम रहे हैं।

भले ही बहुत लोग ज्योतिष पर अँधा विश्वास करते हों लेकिन ज्योतिष एक ऐसी विद्या है जो लोगों को डर के जीवन में धकेलती है। लोग इस डर से बचने के लिए ज्योतिष पर पैसा लुटाने लगते हैं, बात सिर्फ इतनी होती तो चल जाती लेकिन इस पर विश्वास करने वाला ईश्वर पर या खुद पर भरोसा नहीं करता और वह कर्म के सिद्धांत की अपेक्षा भाग्यवादी बनकर जीवनयापन करना शुरू कर देता है। ऐसे व्यक्ति में विश्वास और निर्णय लेने की क्षमता खत्म हो जाती है। जो लोग वेद, ईश्वर और कर्म पर भरोसा करते हैं वे किसी ग्रह या नक्षत्र से नहीं डरते नहीं है। लेकिन इसके विपरीत ज्योतिषफल पाखंड और ढोंग के सहारे बढ़ता है? आज आप अपने मन से प्रश्न कीजिये क्या आप ईश्वर में विश्वास करते हैं? यदि आपका जवाब हां है तो फिर ज्योतिष के अंध विश्वास का फेर क्यों?

- सम्पादक

देश में जुबानी जंग चिंता का कारण

आज पूरा भारत और विश्व कोरोना वायरस से जूझ रहा है। विश्व में एक करोड़ से ज्यादा कोरोना रोगी हैं और लाखों लोग काल के गाल में समा चुके हैं। भारत में लगभग 600000 के करीब कोरोना मरीज हैं और 17 हजार के लगभग लोग मृत्यु का ग्रास बन गए हैं। भारत में इसके साथ साथ चीन सीमा विवाद अपने आप में अत्यंत बड़ी समस्या के रूप में हमारे सामने है, भूकंप की बार-बार आहट और बाढ़ जैसी स्थितियां भी चिंता का कारण हैं। लेकिन ऐसे में सत्ता पक्ष और विपक्ष की जुबानी जंग थमने का नाम ही नहीं ले रही है। देश की सीमाओं पर सेना मुस्तैद है और हर तरह की विपत्ति का सामना करने के लिए लगातार संकल्पित है। दूसरी तरफ कोरोना से लड़ाई, लड़ने के लिए डॉक्टर-नर्स और सारे विभाग संलग्न है, वहीं आतंकवादियों के सफाई में लगी हुई सेना भी अपना शत प्रतिशत योगदान दे रही है। लेकिन इन सबके बावजूद गतिशील जुबानी जंग देख कर ऐसा लग रहा है कि जैसे चारों तरफ आपाधापी मची हुई है।

भारत सरकार की तरफ से 2006 का मामला उजागर करते हुए कहा गया कि राजीव गांधी फाउंडेशन के लिए चीन से नब्बे लाख रूपए के मामले में कांग्रेस जवाब दे? कांग्रेस की तरफ से कहा गया कि प्रधानमंत्री मोदी ने चीन के आगे सरेंडर कर दिया है, फिर भाजपा ने कहा - सोनिया गांधी ने प्रधानमंत्री राहत कोष से राजीव गांधी फाउंडेशन को पैसा क्यों दिलवाया, कांग्रेस जवाब दे? कांग्रेस ने कहा कोरोना के रोग को लेकर सरकार असफल रही है, संक्रमण को रोकने की प्रधानमंत्री के पास कोई योजना नहीं है, फिर भाजपा ने कहा 2008 में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के साथ कांग्रेस पार्टी ने क्या समझौता किया, उसकी जानकारी जनता को क्यों नहीं दी जा रही? फिर कांग्रेस ने कहा जवानों को सीमा पर बिना हथियारों के क्यों भेजा गया? फिर भाजपा ने कहा- कांग्रेस के शासनकाल में ही चीन के साथ समझौता हुआ था की सीमा पर दोनों देशों के जवान हथियारों का इस्तेमाल नहीं करेंगे, ऐसा समझौता क्यों किया गया? फिर

कांग्रेस ने कहा लाखों प्रवासी मजदूरों के लिए सरकार ने कुछ नहीं किया?

इस समय ऐसी ही कुछ राजनीति देखने को मिल रही है। कांग्रेस से जो सवाल पूछा जाता है उसका जवाब न देते हुए सीधे प्रधानमंत्री पर आरोप लगा दिया जाता है। ऐसा लग रहा है कि राहुल गांधी समेत पूरी कांग्रेस बहुत जल्दी में है, उन्हें लग रहा है कि कोरोना संकट और चीन के मामले में जारी संघर्ष के बीच इस समय उनके पास सुनहरा मौका है जिसके चलते वे मोदी को प्रधानमंत्री पद से उतारकर सीधे प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठ जाएं। जल्दबाजी में राहुल गांधी और कांग्रेस के तमाम नेता यह भी समझ नहीं पा रहे हैं कि इस समय मोदी के विरोध के चक्कर में कहीं भारत के जवानों की बहादुरी पर भी सवाल उठा रहे हैं। प्रधानमंत्री ने विपक्षी दलों के नेताओं के साथ बैठक में साफ साफ कहा कि हमारी 1 इंच जमीन पर भी किसी का कब्जा नहीं है, इसके बावजूद सोनिया गांधी और राहुल गांधी बराबर कह रहे हैं कि चीन ने भारत की जमीन पर कब्जा कर लिया है और प्रधानमंत्री ने चीन के आगे सरेंडर कर दिया है ।भारतीय जमीन पर कब्जा रोकने के लिए जिन 20 जवानों ने शहादत दी है क्या यह उनका अपमान नहीं है? तमाम विपरीत परिस्थितियों के बावजूद सीमा पर खड़े हजारों भारतीय सैनिकों का मनोबल तोड़ने की साजिश क्या यह कहना नहीं है कि चीन ने भारत की जमीन पर कब्जा कर लिया है? और प्रधानमंत्री ने सरेंडर कर दिया है?आर्य समाज यह अपील करता है कि संकट की घड़ी में कांग्रेस अपनी हद में रहे और इस बेतुकी बयानबाजी से बाज आए। भारत की एकता, अखंडता और गरिमा को बनाए रखने के लिए जुबानी संतुलन बहुत आवश्यक है।

अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा जरूरतमंदों को खाद्यान्न वितरण

अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ नई दिल्ली के सौजन्य से आर्य समाज द्वारा संचालित गुरुकुल शांति आश्रम के

तत्वावधान में लोहरदगा जिले के कुडू प्रखंड अंतर्गत बड़की चाँपी स्तिथ सरस्वती शिशु मंदिर गुरुकुल के संचालक आचार्य शरतचन्द्र आर्य की उपस्थिति में जरूरतमंद लोगों को राशन वितरण किया गया। इस अन्न वितरण कार्यक्रम में बड़की चाँपी, छोटकी चाँपी, चुन्द पतराटोली, जरियो, दुबांग, कुंदगढा, ओपा, बड़ काटोली आदि के ग्रामीण लाभन्वित हुए। इस अवसर पर आचार्य शरतचन्द्र आर्य ने कहा कि मानव सेवा सबसे बड़ी सेवा है। यह आयोजन अखिल भारतीय दयानंद सेवा आश्रम संघ नई दिल्ली के अध्यक्ष महाशय धर्मपाल एवं महामंत्री जोगेंदर खट्टर के सहयोग से किया गया है। कार्यक्रम में पधारे सांसद प्रतिनिधि भूषण प्रसाद ने आचार्य शरतचन्द्र आर्य एवं अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ का आभार जताया। इस अवसर पर भूषण प्रसाद, लाल गौरीशंकर नाथ शाहदेव, शिव कुमार, शंकर सिंह, मनोहर मोदी, सोहरी देवी, नीतीश सिंह, अभय भारती, सूरज आर्य, डबलू आर्य, गन्दूर आर्य आदि मुख्य रूप उपस्थित थे।'

- जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री

आर्यसमाज ने किया कोरोना योद्धाओं को सम्मानित

कोरोना संकट काल में वायरस संक्रमण से पीडित लोगों की हरसंभव सहायता और ड्यूटी पर तैनात रहने वाले कोराना योद्धाओं पुलिस कर्मियों को आर्यसमाज एवं आर्य वीर दल बलरामपुर के 28 जून को सम्मानित किया। उन्होंने देवीपाटन मंडल के सिपाही से लेकर पुलिस अधीक्षक डॉ. राकेश सिंह तक कुल 25 पुलिस कर्मियों को कोरोना कमांडो प्रशस्ति सम्मान दिया। इस अवसर पर डा. राकेश सिंह ने आर्य समाज और उसकी विभिन्न उपशाखाओं की ओर से समाज हित में जो कार्य किए जा रहे हैं उनकी प्रशंसा करते हुए कहा कि आर्य समाज सच्चा मानव हितैषी संगठन है।

श्री अर्जुन देव चड्डा जी ने सम्मान में मिली पगड़ियों से बनवाकर बांटे मास्क

सार्वदेशिक सभा और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रेरणा से राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रांतीय प्रचार प्रभारी अर्जुनदेव चड्ढा के निर्देशन में कोटा में आर्य कार्यकर्ता कोविड-19 के कारण लॉकडाउन से अब तक निरंतर सेवा सहायता के प्रशंसनीय कार्य विभिन्न क्षेत्रों में कर रहे हैं। इसी क्रम में 28 जून को आर्य समाज के नेता अर्जुनदेव चड्ढा ने सम्मान में मिली पगड़ियों से मास्क बनवाकर राहगीरों और दुकानदारों को बांटे। इन मास्कों को केशवपुरा चौराहे पर भी आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने अर्जुनदेव चड्ढा के साथ डॉ. वेदप्रकाश गुप्ता, राधावल्लभ राठौड़, लालचंद आर्य, किशन आर्य हरियाणा, रामकंवर हरियाणा वाले और रामभरोसे नागर ने बांटा।

- मन्त्री, जिला सभा

प्रथम 3 का शेष

'जीवन की सर्वांगीण उन्नति एवं .....

जिएं तो खुशबू बिखेरते रहें और बीज के रूप में नया जीवन प्राप्त करें।

समापन समारोह में श्री विनय आर्य जी महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने डा वागीश आचार्य जी के सुझाव को मानते हुए कहा कि सभा का यह प्रयास होगा कि हर आयु वर्ग की अलग-अलग कार्यशाला आयोजित करें। श्री धर्मपाल आर्य जी प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने आशीर्वाद रूप में सभी आर्य जनों को समझाया कि यह हमारे कर्मों का ही फल होता है कि किसी मनुष्य को पत्थरों पर भी सुख की नींद आती है और कुछ को मखमल के गद्दे पर भी नींद नहीं आती है। यह हमारी आत्मिक व शारीरिक कमजोरी का ही कारण है।

इस कार्यक्रम को संयोजित करने में श्रीमती रचना आहूजा, आचार्या अमृता आर्या, श्रीमती सविता खुराना, श्रीमती शालिनी आर्या, श्रीमती हविशा आर्या, श्रीमती अपूर्वा चोपड़ा, सुश्री अंकिता चौधरी, सुश्री प्रियंका आर्या, श्री राकेश भटनागर, डॉ मुकेश आर्य, श्री नरेन्द्र अरोड़ा, श्री अजय कालरा, श्री विकास कुमार शर्मा, श्री किशोर आर्य, श्री मोक्ष मेहतानी, श्री विशारद आर्य एवं तकनीकी रूप से इस कार्यक्रम को आयोजित करने में विशेष योगदान देने हेतु श्री नीरज आर्य तथा श्री विपिन भल्ला जी का का विशेष योगदान रहा।

- सतीश आर्य, महामन्त्री,
आर्य केन्दीय सभा दिल्ली

बड़ा कार्य कौन सा है?

(Which Work is Great?)

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

.....कोई बड़ा कार्य करने के लिये अपनी क्षमताओं का विकास करना होगा तभी तो बड़े कार्य करने का साहस जुटा पायेंगे। अपनी क्षमता एवं रूचि का आकलन करना बहुत आवश्यक है। उस कार्य में लगन वाले साधन और उसकी उपयोगिता पर भी विचार कर लेना चाहिए। वेद हमारा मार्ग दर्शन करते हुए कहता है-

पृथक् प्रायन् प्रथमा देवहूतयोऽ कृण्वत श्रवस्र्यानि विदुष्टरः।
न ये शेकुज़ियां नावमा रुहमीर्मेव ते न्यविशन्त केपयः।। ऋ०11/44/6

दिव्य गुणों वाले प्रथम श्रेणी के लोग अपना मार्ग अलग बनाते हैं। वे ऐसे कार्य कर जाते हैं जिन्हें सुन कर लोग दाँतों तले अंगुली दबा लेते हैं।.....

बच्चों को माता-पिता और बन्धु प्रायः यही कहते हैं कि कोई बड़ा काम करो, जिससे तुम्हें यश मिले और कुल-खानदान का भी नाम होवे। प्रत्येक युवा मन भी यह चाहता है कि मैं कोई विशेष कार्य करूँ परन्तु उसे उचित मार्गदर्शन न मिलने से उसके सपने मन में ही रह जाते हैं। ऐसे युवकों के लिये कुछ सुझाव दिये जाते हैं।

सर्वप्रथम कोई बड़ा कार्य करने के लिये अपनी क्षमताओं का विकास करना होगा तभी तो बड़े कार्य करने का साहस जुटा पायेंगे। अपनी क्षमता एवं रूचि का आकलन करना बहुत आवश्यक है। उस कार्य में लगन वाले साधन और उसकी उपयोगिता पर भी विचार कर लेना चाहिए। वेद हमारा मार्ग दर्शन करते हुए कहता है-

पृथक् प्रायन् प्रथमा देवहूतयोऽ
कृण्वत श्रवस्र्यानि विदुष्टरः।
न ये शेकुज़ियां नावमा रुहमीर्मेव
ते न्यविशन्त केपयः।। ऋ०11/44/6

दिव्य गुणों वाले प्रथम श्रेणी के लोग अपना मार्ग अलग बनाते हैं। वे ऐसे कार्य कर जाते हैं जिन्हें सुन कर लोग दाँतों तले अंगुली दबा लेते हैं। जो इस यज्ञमयी परोपकारी नाव में चढ़ने में असमर्थ रहे वे मन्दबुद्धि किनारे ही बैठे रह गये। बड़ा कार्य करने के लिये निम्न गुण होने चाहियें-

1- कार्य करने में दिव्य गुण अर्थात् विशेष प्रतिभा होनी चाहिये। परमात्मा ने सब को कुछ न कुछ विशेष गुण, प्रतिभा दी है। आवश्यकता इन्हें पहचानने की। सामान्य श्रेणी के लोग भेड़चाल से चलने वाले होते हैं।

लोक लीक तीनों चलें कायर कूर कपूत।
तीनों लीक में नहीं चलें शूरा सिंह सपूत।।
तातस्य कूपोऽयामिति ब्रुवाणाः क्षीरं जलं
कापुरुषाः पिबन्ति।।

यह कुआं मेरे बाप दादाओं ने बनवाया है यह कहते हुये खारी जल कायर पुरुष पीते हैं।

2- वे नवीन पथ का निर्माण करते हैं। संसार में जितने भी अनुसन्धान, हुये हैं वहाँ यही देखने में आया है कि अनुसन्धाता ने परम्परा से हट कर दूसरे मार्ग की तलाश करने में अपना जीवन समर्पित किया है। हनुमान का लंका दहन, नैपोलियन बोनापार्ट का आल्पस पर्वत को लांघकर आस्ट्रिया को विजय करना, एडमण्ड हिलेरी और शेरपा तेनजिंग का एवरेस्ट शिखर पर पहुंचना ऐसे अनेक उदाहरण हैं।

3- वे यज्ञिय नौका पर आरुढ़ होते हैं। यज्ञ का अभिप्राय जनहित की भावना, परोपकार आदि से है। जिस कार्य से बहुत लोगों का हित होता हो वह साधारण कार्य भी बड़ा होता है।

4- ईमानदारी और लगन से किया गया कोई भी कार्य छोटा नहीं होता परन्तु उसे देशकाल, परिस्थिति के अनुसार होना चाहिये। जिस कार्य को करने का आपने निश्चय किया है उससे होने वाले लाभ तथा पूरा न होने पर उसके दुष्परिणाम पर पहले से ही विचार कर लेना चाहिये।

बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताय।
बोया पेड़ बबूल का आम कहां से खाय।।

5- लोग क्या कहते हैं इसकी चिन्ता न करें। संसार का यह नियम है कि जब कोई व्यक्ति परम्परा से हट कर कोई कार्य प्रारम्भ करता है तो परम्परा वादी लोग उसका उपहास करते हैं। यदि फिर भी वह अपने कार्य को आगे बढ़ाता है तो विरोध, बाधा डालना, हानि पहुंचाना आदि किया जाता है। परन्तु इस स्थिति में भी जो साहस और धैर्य से अच्छे कार्य को करता ही जाता है तो वे ही लोग उनको सम्मान देते हैं।

6- बड़ा कार्य उसे कहते हैं जो जनता को कष्टों से मुक्ति दिलाये। जैसे किसी सार्वजानिक कार्य को आगे बढ़कर करवाना। लोगों पर बिना कारण किया जाने वाला अत्याचार, शोषण, अभाव आदि को दूर करने का संकल्प लेकर आगे बढ़ने वालों के साथ दूसरे लोग भी जुड़ते चले जाते हैं।

7- लोक में कहावत है अकेला चना भाड़ नहीं तोड़ सकता। परन्तु यह बात एक अंश में ही सत्य है। आपको स्मरण होगा कि झारखण्ड के दशरथ मांझी ने पहाड़ को काटकर सड़क बना दी। राजस्थान के अलवर जिले में राजेन्द्र सिंह ने सूखी नदी को सदा नीरा बना दिया। विविध क्षेत्रों में ऐसे अनेक साहस के धनी युवाओं ने उल्लेखनीय कार्य किया है और वर्तमान में भी कर रहे हैं जिनके इतिवञ्जत्त समाचार पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं। उनसे प्रेरणा लेकर आप भी किसी जनहित के कार्य में जुट सकते हैं।

8- यदि आप असाधारण प्रतिभा के धनी हैं तो इंजीनियरिंग, टैक्नोलॉजी या अन्य किसी क्षेत्र में कोई विशेष यन्त्र अथवा प्रचलित पद्धति से हटकर सस्ते, सरल और अधिक उपयोगी यन्त्र का निर्माण कर सकते हैं। अथवा कोई कार्य सरलता से किया जा सके ऐसी कार्य प्रणाली प्रस्तुत कर सकते हैं।

9- बड़े कार्य का कोई मापदण्ड निर्धारित नहीं किया जा सकता। कई बार उचित अवसर पर किया जाने वाला एक छोटा से कार्य भी महत्वपूर्ण हो जाता है। आवश्यकता है निष्ठापूर्वक उसमें लग जाने की।

10- पहले सार्वजनिक छोटे कार्य करने का दायित्व लें जिन्हें पूरा कर लेने से आपका अनुभव और आत्मविश्वास

- *शेष पृष्ठ 7 पर*

Makers of the Arya Samaj : Swami Shraddhanand Ji

Continue From Last issue

Munshi Ram now sent to a Mission School at Benares. Inspite of everything, he had kept up the habit of going to the temple every morning and evening. But one day a strange thing happened. He went as usual to the temple of Vishwa Nath. But he was not permitted to enter it. This was because some Rani was at that time worshipping there. Young Munshi Ram could not understand this. "Why should not the temple be open to all, rich and poor alike?" He asked himself. "Why should the god favour the rich and neglect the poor? Should he not be good to all?"

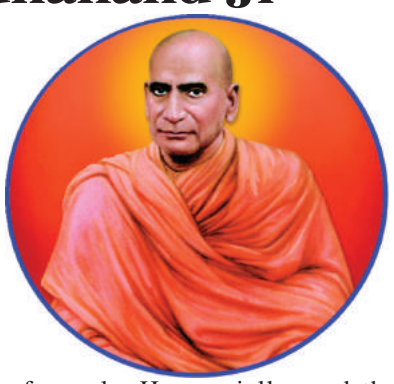

On account of his regular exercises he developed into a fine youth. So he became a terror to all the bullies of his school. It is interesting to relate that he always tried to protect his weak classmates from these bullies.

After some time Munshi Ram sat for the Entrance examination. He did all his papers well and expected to succeed. But only a day before the examination was over, he was told that all the students would have to sit again for their examination in English. This was done, because it was suspected that the English questions had leaked out. Munshi Ram was very annoyed at this. He was all the more annoyed because he would have to put off going to see his mother at TaIwan.

For some time he did not know what to do. At last he made up his mind not to take the examination.

Then he set outforhis native place all alone. There a happy event awaited him. He was to be engaged to the daughter of a rich man. His mother was naturally glad to see him. But he reached the place in rather low spirits. It was because he had lost some of his things on the way.

After a few months he went back to his school. But he took no interest in his studies. He absented himself from the school very often. At last his name was struck off the rolls of the school. But his father knew nothing about it. He did not know that his son spent most of his time in seeing the sights of Benares.

He also developed a passion for reading novels at this time. So fond was he of reading that he would even read them by moonlight. But his father never thought that he was neglecting his studies. On the other hand he thought the boy was devoting his time to his own books. It was no wonder that he failed in the examination that year.

He was now sent to a Mission School at Benares. Inspite of everything, he had kept up the habit of going to the temple every morning and evening. But one day a strange thing happened. He went as usual to the temple of Vishwa Nath. But he was not permitted to enter it. This was because some Rani was at that time worshipping there. Young Munshi Ram could not understand this. "Why should not the temple be open to all, rich and poor alike?" He asked himself. "Why should the god favour the rich and neglect the poor? Should he not be good to all?"

On account of this he lost his faith in idol worship. He even thought of turning Christian. But Christianity soon lost its interest for him. He therefore became a prey to many doubts and fears. His mother also died at this time. All these things made him very unhappy. Yet he was still able to pass the examination. He stood first among the successful candidates that year.

He now joined the Queen's College at Benares. But there again he fell into evil company. He smoked a great deal. It is said that he also took to other evil pastimes. The result was that he went from bad to worse. He did not do any serious reading, but devoted himself only to the study of novels. He specially read the novels of Sir Waiter Scott. These fired his imagination and he wanted to play the knight. He liked to lead a life of adventure, and do all sorts of daring things.

But all this came to an end when his father asked him to go to Taiwan for his marriage. Before he went there he spent a few days at Mathura. At this place he saw many interesting things. Two of these he could never forget. The one was the feast which his father gave to the Choube Brahmins. Four of these persons were invited. They ate such a lot that Munshi Ram's father feared for their health. But nothing happened to them. They' were found quite fit in the evening, begging for more food.

To be continued.....

With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

Regn. No. S - 8149/1976
Email : aryasabha@yahoo.com
Website : delhisabha.org

ओ३म्

२३३६०१५०
२३३६५९५९
फैक्स : २३३६५९५९

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०)
The Delhi Arya Pratinidhi Sabha
१५—हनुमान् रोड, नई दिल्ली — ११०००१

क्रमांक : 2020-21/065/दिल्ली सभा — दिनांक : 30 जून, 2020

कोरोना महामारी (अनलॉक-2) में सरकार द्वारा जारी आवश्यक दिशा-निर्देश समस्त आर्यसमाजों के अधिकारीगण कृपया ध्यान दें 31 जुलाई, 2020 तक लागू रहेंगे ये नियम

माननीय महोदय/महोदया,

सादर नमस्ते!

आपको विदित ही है कि वैश्विक महामारी कोरोना के कारण 22 मार्च से सभी धार्मिक संस्थाएं बंद कर दी गई थी और उनमें कोई गतिविधि नहीं हो रही थी। हमारी आर्य समाजों में धर्माचार्य महोदय और सेवक प्रतिदिन यज्ञ करते रहे, ऐसा निर्देश भी था और वास्तविकता में ऐसा हुआ भी है।

8 जून, 2020 से लागू अनलॉक -1 में कुछ छूट दी गई तथा सभी धार्मिक संस्थाओं में धार्मिक - सांस्कृतिक गतिविधियां आरंभ हुईं। भारत सरकार के निर्देशानुसार 29 जून, 2020 के अनुसार दिनांक 1 जुलाई से अनलॉक-2 की शुरुआत हो रही है, इसमें विशेष छूट नहीं दी गई हैं। हमारी धार्मिक संस्थानों के लिए वही अनलॉक 1 वाले दिशा-निर्देश ही लागू हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में हम सबको सावधानीपूर्वक कार्य करने हैं जिससे हमारे आर्यसमाज मन्दिर एवं संस्थान को या हमारे सदस्यगणों को यह महामारी प्रभावित न कर सके। अतः दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आप सबसे निम्न बिंदुओं पर विशेष ध्यान देने का अनुरोध करता हूं -

- अभी कुछ दिन यज्ञ वेदी पर 4-5 आर्यजन ही यज्ञ करें। यदि अधिक लोग शामिल हों तो शारीरिक दूरी - दो गज की दूरी का विशेष ध्यान रखा जाए।
- 31 जुलाई, 2020 तक सप्ताहिक सत्संग का आयोजन न किया जाए।
- विवाह व सामाजिक कार्यक्रमों को आयोजित न करने का प्रयास किया जाए। यदि आयोजन हों तो सरकारी दिशा-निर्देशों के अनुसार सम्मिलित व्यक्तियों की संख्या 50 से ज्यादा न हो।
- यज्ञशाला तथा सत्संग हॉल के बाहर हाथ धोने की सुचारू व्यवस्था हो। सभी सम्मिलित लोगों की थर्मल स्क्रीनिंग की जाए। सभी आयोजन में शारीरिक दूरी का विशेष ध्यान रखा जाए।
- ध्यान दिया जाए कि 65 वर्ष से अधिक आयु के लोग/गम्भीर बीमारी से ग्रस्त लोग, गर्भवती महिलाएं एवं 10 वर्ष की आयु से छोटे बच्चे किसी आयोजन में सम्मिलित न हों।
- किसी भी समारोह में शामिल लोगों के मोबाइल में आरोग्य सेतु एप्प अवश्य इंस्टाल होना चाहिए।
- सभी व्यक्ति तथा आर्य समाज के सहयोगी सदस्यगण अनिवार्य रूप से मास्क अवश्य पहनें।
- आयोजन से पहले और बाद में सफाई की विशेष व्यवस्था होनी चाहिए।
- विवाह आदि आयोजन हेतु आवेदन पत्र में एक बिंदु लिखा जाएगा कि 'मैं कोविड-19 के बचाव के लिए सरकार द्वारा निर्देशित नियमों का पालन करूंगा।'
- समाज के उत्सव, वेद प्रचार सप्ताह, निर्वाचन आदि की कोई भी गतिविधि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा/दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अगली सूचना तक स्थगित रहेगी।
- सरकार द्वारा दिए गए दिशा-निर्देशों का पालन अवश्य करें।

भवदीय

(धर्मपाल आर्य)
प्रधान, मो. : 9810061763

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु. प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु. प्रचारार्थ 50 रु.	
स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.	प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

पृष्ठ 6 का शेष

बढ़ जायेगा तथा दूसरे लोगों को भी यह विश्वास हो जायेगा कि आप इस बड़े कार्य को कर सकते हैं।

11- यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः किसी कार्य को करने में सफलता न मिले तो छोड़ नहीं देना अपितु यह विचार करना कि पहले कार्य में कौन सी कमी रह गई थी, उसका ज्ञान करके पुनः दो गुने उत्साह से कार्य को प्रारम्भ कर देना चाहिये। एक विचारक ने कहा है-

प्रारम्यते न खलु विघ्न भयेन नीचैः
प्रारम्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रति हन्यमानाः
प्रारभ्य चोत्तम जनाः न परित्यजन्ति।।

निम्न श्रेणी के लोग विघ्न बाधाओं को देखकर किसी अच्छे कार्य को प्रारम्भ ही नहीं करते। द्वितीय श्रेणी के लोग वे हैं जो किसी अच्छे कार्य को प्रारम्भ तो कर देते हैं परन्तु थोड़ी सी भी बाधा आ जाने पर उसे छोड़ देते है। उत्तमकोटि के लोग वे होते हैं जो किसी कार्य को प्रारम्भ करने पर चाहे कितनी ही बाधायें आयें उनका सामना करते हुये कार्य को मध्यम में छोड़ते नहीं। उसे पूरा करके ही दम लेते हैं।

शोक समाचार

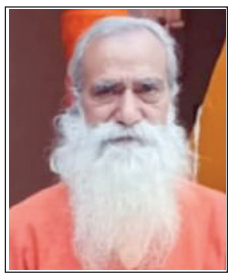

महात्मा चैतन्य मुनि जी का निधन

आर्यसमाज के वैदिक विद्वान, वानप्रस्थी, अनेक पुस्तकों के लेखक, प्रवक्ता, महात्मा चैतन्य मुनि जी (पूर्व नाम श्री भगवानदेव चैतन्य जी) का दिनांक 26 जून, 2020 को सुन्दर नगर मंडी (हिमाचल प्रदेश) के आश्रम में हृदयाघात होने से निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। महात्मा जी हिमाचल एवं जम्मू-कश्मीर के अनेक वैदिक आश्रम से जुड़े थे।

पण्डित मामचन्द 'आर्यपथिक' का निधन

आर्यसमाज के वैदिक विद्वान, रेड़ियो सिंगर, सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. मामचन्द आर्य पथिक जी का 1 जुलाई, 2020 रात्रि 9:30 बजे उनके रुड़की (हरिद्वार) निवास पर अकस्मात् निधन हो गया। वे 86 वर्ष के थे और गत कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे। उनका 2 जुलाई, 2020 को पूर्ण वैदिक रीति के साथ अन्तिम संस्कार किया गया।

पण्डित प्रमोद शास्त्री जी को मातृशोक

आर्यसमाज बसव कल्याण (कनार्टक) के कार्यकर्ता पंडित प्रमोद शास्त्री निरगुदी जी की पूज्य माता आर्यसमाज बसव कल्याण की वरिष्ठ सदस्या श्रीमती कोंडनाबाई का 1 जुलाई, 2020 को 75 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे कुछ समय से बीमार चल रही थीं। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। वे अपने पीछे 3 पुत्र एवं 1 पुत्री का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

श्री कृष्णदत्त शर्मा जी का निधन

गुरुकुल एटा (उ.प्र.) के स्नातक श्री कृष्ण दत्त शर्मा जी का दिनांक 26 जून, 2020 को लगभग 62 वर्ष की आयु में हृदयगति रूक जाने से अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

पं. चमूपति एम.ए. के सुपुत्र श्री वेद प्रकाश मेहता का निधन

आर्यसमाज के महान् विद्वान, महत्वपूर्ण स्तम्भ स्व. पं. चमूपति एम.ए. के सुपुत्र एवं आर्यसमाज मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान) के सम्मानित अधिकारी श्री वेद प्रकाश मेहता जी का सोमवार दिनांक 29 जून, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से जयपुर में सम्पन्न हुआ।

श्री कृष्णदत्त शर्मा जी का निधन

आर्यसमाज एवं आर्य वीर दल बलरामपुर (उ.प्रदेश) से जुड़े श्री अजय कृष्ण पाण्डे जी का 27 जून, 2020 को अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। श्री पाण्डे जी डी.ए.वी. इन्टर कॉलेज बलरामपुर में अध्यापक के पद नियुक्त थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 29 जून, 2020 से रविवार 5 जुलाई, 2020

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 2-3 जुलाई, 2020

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 1 जुलाई, 2020

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के सौजन्य से प्रथम

ऑनलाइन आरोग्य-वैराग्य-सौभाग्योदय शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश का प्रथम ऑनलाइन आरोग्य-वैराग्य-सौभाग्योदय शिविरि आर्य समाज वेदमन्दिर, कॉलोनी सुंदर नगर में 12 जून से 22 जून तक आयोजित किया गया जिसमें देशभर से चुने हुए उच्चकोटि के स्वाध्यायशील साधकों ने भाग लिया।

शिविर के संरक्षक व साधक के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के प्रधान प्रबोधचंद्र सूद (अधिवक्ता) व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुमन सूद ने दस दिन तक निरन्तर व्यवस्था में सहयोग दिया।

शिविर में विशेषरूप से हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, दिल्ली व बिहार राज्यों से कठिन परीक्षा प्रक्रिया द्वारा चयनित साधकों ने वैदिक आध्यात्मिक दर्शनशास्त्रों का अध्ययन किया और क्रियात्मक योगसाधना का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया।

शिविर में वैदिक आध्यात्मिक जगत के सुप्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक-रोझड गुजरात का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। जिनके द्वारा वेद, दर्शन, उपनिषदों के गूढ़ रहस्यों को सरलतम रूप में हृदयंगम कराया गया। सम्पूर्ण दु:ख निवृत्ति और पूर्णानन्द प्राप्ति के लिए योगाभ्यास की सरलतम विधि सिखलाई गई, ईश्वर, आत्मा और प्रकृति के यथार्थ स्वरूप का परिचय कराया गया। इस बीच 'महर्षि दयानंद सरस्वती रचित अमरग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश' पर साधकों ने विशेष विचार मंथन किया।

एक ओर जहां पूरा विश्व कोरोना रूपी महामारी से आक्रांत है वहीं पर देव भूमि हिमाचल से अनेक लोगों ने लम्बे समय से चले आ रहे लॉक डाउन के बीच अपने तनाव पर नियंत्रण पाया। इस बीच श्री प्रबोधचंद्र सूद दम्पत्ति से अनेकों वृहद यज्ञों का आयोजन कर लोगों को महामारी के प्रति जागरूक किया। आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान डॉ. राजेश रावल, महामंत्री विपन महाजन भी शिविर से जुड़े। सभा के पूर्व महामंत्री श्री रामफल आर्य ने साधकों को सम्बोधित किया।

शिविर संचालक आचार्य धर्मवीर मुमुक्षु ने साधकों को दीर्घायु, सुखायु के आयुर्वेदोक्त सिद्धांतों से परिचय कराया और मानवीय मूल्यों की निरंतर होती जा रही क्षति पूर्ति के लिए कठिन पुरुषार्थ, स्वाध्याय और आत्मनिरीक्षण विषयक संवाद का प्रतिदिन आयोजन किया। हिमाचल प्रदेश के कई मनोनीत सदस्यों ने भी ऑनलाइन शिविर में भाग लिया।

शिविर में मुनि परसाराम, नागेन्द्र प्रशाद आर्य, नरेश काम्बोज, विक्रमादित्य महाजन, श्याम सिंह सहयोगी, अल्का रावल, अंजू राजबीर, सुमन भारतीय, सूरजभान आर्य आदि ने शिविर में गंभीरता पूर्वक भाग लेते हुए उत्कृष्ट अनुशासन एवं सहयोग का उदाहरण प्रस्तुत किया।

शिविर के सह संचालक डॉ. मनीष आर्य, महासचिव-राष्ट्रीय शिक्षा एवं संस्कृति परिषद दिल्ली, अनलाइन शिविर व्यवस्थापक प्रभात आनन्द आर्य, वेदमित्र आर्य, माता यशोमती आनन्द व आर्य समाज सुंदर नगर कॉलोनी का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। - ***विपिन महाजन, महामन्त्री***
आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश

प्रतिष्ठा में,

बच्चों को दें ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन से भरपूर शहीदों की अमरकथाओं पर आधारित कॉमिक्स

प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001
मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह